सद्विवेक की साधना

-ब्र.कु.गंगाधर

जीवन के विकास में मन बहुत ही महत्वपूर्ण पार्ट बजाता है या यों कहें कि मन का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण है। अपने यहां एक बात बहुत ही प्रसिद्ध है जो बार-बार कहने में आता है कि ''मन मानव के मोक्ष व बंधन का कारण है।'' यदि मन निर्मल हो जाए, श्रेष्ठ भावनाओं और विचारों से भर जाए, विवेक के प्रकाश से प्रकाशित हो जाए तो मानव को मुक्ति का आनंद मिल सकता है। परंतु जो उससे उल्टा, मलिन, स्वार्थयुक्त संकुचित भाव विचार व वृत्ति से संपन्न बन गया तो मानव को बंधन की दिशा में धकेल देता है। मन कोई समय वस्तु को अच्छा मानता है और दूसरे वक्त उसे खराब भी मानता है। परिणामत: मन राग-द्वेष का अनुभव कर सुखी और दु:खी होता रहता है। यह मन के सुधार करने के लिए ही साधना या मेडिटेशन है। जिससे मन की उन्नति होती है। जिस साधना से मन के स्वरूप को बदलना, उतरोत्तर शुद्ध, सात्विक मधुमय, प्रेममय और मंगलमय बनाने का नाम ही साधना है। जो साधना इस चीज को ठीक नहीं कर सकता उस धर्म का कोई उपयोग नहीं है। मानवता के विकास क्रम में उनका योगदान नहीं हो सकता। इसीलिए हम देखते हैं कि प्रत्येक धर्म की साधना मन की शुद्धि या मन के सुधार पर ही महत्व देता है। इस तरह मानव जीवन की उन्नति में मन का महत्व बहुत होने के कारण वैदिक काल में ऋषि मुनियों ने भी उनके बारे में खूब विचार किया है।मन की शुद्धि और मंगलकामना पूर्ण करने के लिए प्रार्थना को महत्व दिया गया है। उसके साथ विवेक अथवा सद्बुद्धि की प्राप्ति को भी बहुत महत्वपूर्ण माना है। सद्बुद्धि का महत्व कौन नहीं जानता? जीवन के संग्राम में सफल होने के लिए सब एक आवाज से स्वीकार करते हैं। जिसकी मदद से सत्य-असत्य, तथा शुभ-अशुभ का भेद अच्छी तरह से समझ सकते हैं और खुद के लिए क्या अच्छा है और अपनाने जैसा है? क्या छोड़ने जैसा है? उसका निर्णय कर सकते हैं।

बिन सद्बुद्धि के मानव जीवन को उज्ज्वल बना नहीं सकता। उसको दृष्टिहिन कहना गलत नहीं होगा। परंतु जो विवेक एवं सद्बुद्धिवान है उनकी बात ही न्यारी है। वे तो पल-पल जागृत रहते हैं। कोई भी वातावरण या कोई भी काम में प्रगति सधता रहता है। उनका विवेक निरंतर निर्देशन देता रहता है वो उनका चौकीदार का काम करता है। जीवन में भयावह स्थानों में प्रलोभन मे से रक्षा करने का काम भी सद्बुद्धि ही करती है। प्रतिकुल परिस्थिति में भी उनकी सेवा तैयार रहती है। जब चारो ओर निराशा के बादल से नि:सफलता दिखाई दे रही हो, चिन्ता ने घेर लिया हो, उन परिस्थिति में से बाहर अनेकों को रास्ता दिखाई न पड़ता हो तब उन्हें विवेक बुद्धि से मार्ग दर्शन मिलता है। जीवन के विकास या सद्पयोग के लिए सद्बुद्धि बहुत जरूरी है।

कई लोग मानते हैं कि दिमाग में खूब ज्ञान भरना, नई-नई इन्फोरमेशन एकत्रित करना, उनके भाषा व विषयों का ज्ञान होना उनका समावेश सद्बुद्धि में नहीं होता। विवेक के साथ उनका कोई संबंध नहीं है। सद्बुद्धि तो सत्य और शिव को पहचाने वाली एवं अपना लेने वाली बुद्धि है। और यही जीवन की आवश्यकता है। इच्छा या उपासना भी उनकी ही की जाती है।

सद्बुद्धि माना सत्य रूपी परमात्मा को जानने वाली या पहचानने वाली बुद्धि ऐसा अर्थ भी होता है। सद्बुद्धि का दूसरा अर्थ सत्यनारायण या स्वच्छ बुद्धि भी होता है। जिसको विवेक भी कहते है। बुद्धि और मन का सम्बन्ध बहुत ही नजदीक का है। इसलिए श्रेष्ठ प्रकार की बुद्धि के लिए श्रेष्ठ मन की भी जरूरत है। श्रेष्ठ मन का अर्थ, बेशक निर्मल मन ही होता है। ज्ञान के पवित्र प्रकाश बना रहे उसके लिए मन निर्मल बनाना जरूरी है। गीता में कहा है कि आसूरी सम्पत्ति मन का मेल है। उसे दूर कर दैवी सम्पत्ति की जीवन में प्रतिष्ठापित करने की जरूरत है। ऐसे करने से मन में अंधकार का आवरण हट जाता है। और उसे प्रकाश या सत्यज्ञान की प्राप्ति होती है। ऋषियों ने यही हेतु की सिद्धी के लिए उपासना करने को बताया है। गायत्रीमंत्र का आज बहुत करके अनुष्ठान करने में उपयोग करते हैं। लोग उनका उपयोग लौकिक या भौतिक हेतु के लिए करते हैं। लेकिन उनमें छूपा पार ब्रह्म परमात्मा का प्रकाश का ध्यान करने को कहा गया है और परमात्म अपनी बुद्धि की प्रेरणा दे ऐसी प्रार्थना की है। मानव की बुद्धि जब परमात्म प्रेरित होकर कार्य करती है तब प्रत्येक काम मंगल, सफल तथा उपयोगी होता ही है। ऐसा अनुभव से व्यक्ति का अज्ञान और अहंम् तथा ममत्व मर जाता, साथ उनका समग्र जीवन ईश्वर के हाथ में हथियार रूप बन जाता। जीवन का सच्चा आनंद तभी ही शुरु होता है। इशावास्योपनिषद में इसी हेतु से प्रार्थना करते हुए श्लोक है - ''हिरण्यमेन पात्रेण सत्यस्यापिहित मूखम।
तत्वं पूषन्नपावृणु सत्य धर्माय दृष्टेय।।''

सत्य रूपी परमात्मा का स्वरूप माया के सोनेरी ढंकन या तो अज्ञान से ढंका हुआ है। वे ढक्कन हमारे सामने से, हे प्रभु। आप दूर करें जिससे हम सत्य को जान सके और आपका दर्शन भी कर सकें। सद्बुद्धि, विवेक के ज्ञान की प्राप्ति के लिए ऋषिवरों ने ऐसे खास महत्व दिया है। क्योंकि उसी पर जीवन की उन्नति या अवनति का आधार है। परमात्मा के पहचानने में सद्बुद्धि का होना बहुत ही महत्व रखता है। सद्बुद्धि को प्राप्त कर मन को सदा कल्याण कारक, उत्तम भाव, विचारवान बनाये रखना, श्रेष्ठ कर्मों से जीवन को शुशोभित तथा उज्ज्वल करना ये हरेक का ध्येय होना चाहिए। ऐसे व्यक्तियों से समृद्ध समाज, देश तथा संसार सचमुच सुखी, शांतिमय बन सकता है।

दादियों के श्रीमुख से ..

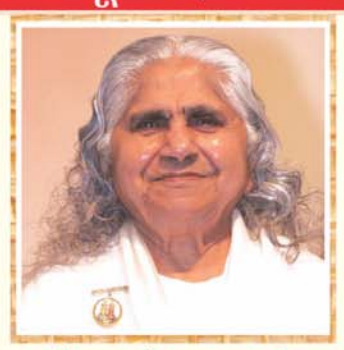

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

बाबा ने निश्चिंत रहने की गिफ्ट दी है

सम्पूर्णता की ओर बढ़ने और बढ़ाने का आधार ही है -निश्चय। बुद्धि जब निश्चय वाली है तो बड़ी शक्तिशाली है। निश्चय से अपनी निर्बलता को तो खत्म कर दिया दूसरे की भी खत्म करने के निमित्त बन जाते हैं। निश्चय ने कमजोरियों को खत्म कर दिया, क्या करूँ, कैसे करूँ यह भाषा ही बदल गयी। निश्चय के बल से सफलता का सितारा चमकने लगा है। एक बल एक भरोसा क्या होता है, निश्चय यह अनुभव कराता है। निश्चय बुद्धि बनने से सच्ची भावना का भाड़ा कितना रिटर्न में मिलता है, वह निश्चय दिखाता है। निश्चय वाला निश्चिन्त रहता है। उसको निश्चिंत रहने की बाबा से गिफ्ट मिलती है। सेवा का भी फिक्र नहीं, एक सेंटर तो क्या लेकिन सौ सेंटर्स के निमित्त हों तो भी फिक्र से फारिग हैं क्योंकि अलबेले नहीं हैं इसलिए निश्चिंत हैं। थोड़ा भी अलबेला रहने वाला कभी निश्चिन्त नहीं रह सकता है। एक सेंटर सम्भालने वाला अलबेला है तो उस सेंटर की रूप रेखा, वह खुशबू नहीं होगी क्योंकि जिसे बाप में निश्चय है तो वह नजर आता है। किसमें निश्चय रखा हुआ है, वह चला रहा है, घर बाबा का है, सेंटर बाबा का है, दुकान बाबा का है, सर्विस भी बाबा की है इसलिए जो बाबा के घर आते हैं उनको यह भासना आती है, भगवान के घर आये हैं। निश्चय बुद्धि और निश्चिंत रहने का जो बाबा ने भाग्य दिया है, बाबा को फालो करके अपने को पद्मापद्म भाग्यशाली समझना, यह है भावना का भाड़ा। जहाँ कदम वहाँ कमाई ही कमाई है।

पुराने शरीरों में रहते हुए अंतिम जन्म में, अंतिम स्मृति एक बाबा की रहे -यह बाबा की इच्छा हम बच्चों के लिए है। ऐसे लगता है बाबा को इस बात के बिगर और कुछ बात हमारे लिए कहने के लिए नहीं है। हम बच्चों में बाबा का इतना मोह है जो बस हमारी ही नजरों के आगे रहें या नजरों में समाये रहें, मतलब हम बाबा की नजर से दूर न रहे। जब तक फरिश्ता नहीं बने हैं, तब तक सच्ची ब्राह्मण लाइफ में रहें। याद और गुणों पर ध्यान रखने वाली यह लाइफ है। ब्राह्मण लाइफ में याद और सेवा से गुणवान बनना और गुण दान करना सहज हो जाता है।

हर बात को समटने लगेंगे तो छोटी बात बड़ी नहीं लगेगी, बड़ी भी छोटी हो जायेगी यानि कोई भी बात हमको नीचे नहीं खींचेगी। हम अपनी उपराम स्थिति से सफलता स्वरुप का अनुभव करेंगे। संगठन की शक्ति को बढ़ाने में यह दो बातें बहुत मदद करती हैं। एक तो अपनी स्थिति मजबूत हो, दूसरा संगठन की शक्ति को बनाने का बहुत ध्यान हो। तो आजकल समय अनुसार जो बात हमारे ध्यान पर आती है, धारणा में लाने के लिए उसमें पूरा दृढ़ संकल्प है और वह धारणा आवश्यक लगती है इसलिए फिर उसको ढीला छोड़ना अच्छा नहीं लगता है क्योंकि इस धारणा में हमारी उन्नति समाई हुई है। जैसे अभी हम अपने लक्ष्य तक पहुँच रहे हैं तो हम अपने पर्सनालिटी को भी देखें। तो हमारी पर्सनालिटी में अपने लिए भी अच्छा लगेगा और संगठन में भी बल भरेगा। और जिस सेवा के अर्थ निमित्त है उसमें भी सफलता मिलेगी।

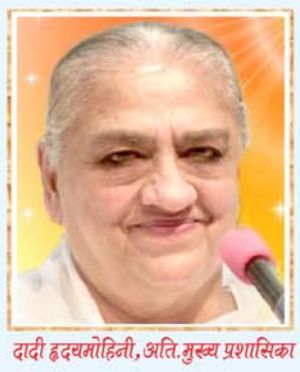

दादी हृदयमोहिनी, अति.मुख्य प्रशासिका

अविनाशी खुशी का भाग्य संगम पर है

बाबा कहते हैं खुशी में नाचो। पाँव का नाचना तो किसको आयेगा, किसको नहीं, वह भी सदा नाच नहीं सकते हैं। यहाँ बाबा तो कहते कि सदा नाचो, तो यह है मन की खुशी का नाचना। मन में खुशी होगी तो वह अपने एक्शन के द्वारा दिखाई देगी। और खुशी ऐसी चीज है जो मनुष्य को कहाँ से भी मिल नहीं सकती है। ऐसा कोई दुकान नहीं होगा जहाँ सदाकाल की खुशी मिले। बाबा हमको सदाकाल की खुशी का खजाना देते हैं। खुशी सदा साथ रहे। लोग तो टेम्प्रेरी खुशी के लिए कितना कुछ खर्चा करने के लिए भी तैयार होते हैं। लेकिन हमको बिना कौड़ी खर्चे के बाबा ने सदा की खुशी दी है क्योंकि अविनाशी बाबा अविनाशी चीज ही देगा। तो बाबा ने इतनी अविनाशी खुशी और अखण्ड, अटल ऐसी खुशी दी है जो हमारे पास कभी दु:ख की लहर नहीं आ सकती। जहाँ खुशी होगी, वहाँ दु:ख नहीं होगा और जरा भी दु:ख की लहर आई तो खुशी गुम हो जायेगी। तो खुशी कभी भी गुम होनी नहीं चाहिए क्योंकि यह अविनाशी बाबा का, अविनाशी खुशी का वर्सा बार-बार नहीं मिलता है। तो हम अपने आपसे पूछें अगर कोई भी प्रकार की परिस्थिति आती है तो उसमें हमारी खुशी गुम तो नहीं होती है। परिस्थिति माना पेपर इसलिए इसको आप और कुछ नहीं समझो, यह एक हमारे लिए पेपर है और पेपर में जो परीक्षा दे करके अच्छे मार्क्स लेंगे वह आगे क्लास में जायेंगे। और जो पढ़ाई में कच्चे होंगे वह पेपर (परिस्थितियों) से डरेंगे।

ब्रह्मा बाबा के सामने भी पेपर आये और फर्स्ट नम्बर में पास हो गये, यह हमारे सामने प्रेक्टिकल प्रुफ है। पेपर हमको और ही पक्का बनाता है इसलिए इससे कभी घबराना नहीं है। कोई ऐसे हैं जो छोटे से पेपर से भी प्रभावित होते हैं, तो कभी खुशी, कभी गम के वश हो जाते हैं। बाबा तो कहते हैं कि अभी तो शेर आना है, जब चूहे बिल्ली से घबरा गये तो शेर के आगे तो पहले ही सो जायेंगे, फिर क्या होगा? इसलिए परिस्थिति या कोई बात में अपने को मुँझाना नहीं है क्योंकि बाबा ने हमको ज्ञान और योग के पंख लगा करके उड़ती कला की बाजी सिखाई है, तो जिन्हें उड़ना आता है वह हिमालय जितनी बड़ी परिस्थिति को भी सहज पार करेंगे। जब ऊंचे उड़ जायेंगे तो कितनी भी बड़ी परिस्थिति हो वह हमको छोटी सी लगेगी। इसलिए बाबा कहते कि जब ऐसी कोई बात आये तो उड़ जाओ। तो अभी ऊँचा उड़ना सीखो लेकिन इसके लिए अपने पंखों को शक्तिशाली बनाओ। पंख कहीं ढीले न हों वा कहीं पंख चिपके हुए न हों, नहीं तो परिस्थिति के वश हो जायेंगे। फिर तो पास हो ही नहीं सकेंगे। इसलिए पहले अपने पंखों को चेक करो -ज्ञान और योग की मेरी दोनों ही सब्जेक्ट जो हैं वह ठीक हैं? जब मैं उड़ना चाहूँ तब उड़ सकता हूँ? या सिर्फ यही समझता हूँ कि मैं उड़ सकता हूँ और समय पर धोखा खाता हूँ? तो हमारे ज्ञान की तलवार की धार बड़ी तेज होनी चाहिए और इस ज्ञान की तलवार को केवल म्यान में ही रख करके खुश न हो जाओ बल्कि हमेशा अपनी इस तलवार को देखते रहो तो समय पर काम में आ सकेगी। अंत में तो यह पाँचों तत्व आँधी, तूफान, आग, पृथ्वी का हिलना यह सब इकट्ठा काम करेंगे तो सोचो उस समय हमारी कैसी स्थिति होनी चाहिए? अभी तो फिर भी ठीक है, कहीं कुछ, कहीं कुछ होता है तो एक दो के सहारे से, स्थान के सहयोग से अपने को फिर भी बचा रहे हैं। लेकिन जब पाँच तत्व ही एक साथ काम करेंगे तो अन्त में ऐसा कोई सहारे का स्थान मिलेगा? नहीं। उस समय तो हमारी यही तैयारी काम आयेगी कि फरिश्ता बनके उड़ जायें, बस। तो उसके लिए अभी से अशरीरी बनने का अभ्यास चाहिए।